प्रवेशिका प्रथम वर्ष
गायन - वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक : 75, न्यूनतम 26
क्रिया : 60 शास्त्र मौखिक : 15

शास्त्र :

१) निम्नलिखित शब्दों की संक्षिप्त परिभाषाएँ :
संगीत, ध्वनि, नाद, स्वर, शुध्द स्वर, विकृत स्वर (कोमल, तीव्र) वेर्जित स्वर, सप्तक, मेल, अलंकार (पलटा), राग, जाति(ओड़व, षाड़व, संपूर्ण) वादी, संवादी, पकड़, आलाप, तान, स्वरमालिका (सरगम गीत) लक्षणगीत, स्थायी, अंतरा, लय (विलंबित, मध्य, द्रुत) मात्रा, ताल, विभाग, सम, खाली, दुगुन, ठेका, वर्जित स्वर, आवर्तन इन सभी पारिभाषिक शब्दों का वर्णन पाठ्यक्रम के राग तथा तालों के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जाए।

२) पाठ्यक्रम के रागों का शास्त्रीय ज्ञान : रागों के मेल (थाट), स्वर, आरोह, अवरोह, पकड़, मुख्य – स्वरसमुदाय, समय, जाति, वादी, संवादी, वर्जित स्वर आदि का विवरण।

३) स्वरलिपि के चिन्हों का प्रारंभिक ज्ञान।

क्रियात्मक :

अ) स्वरज्ञान : सात शुध्द स्वरों को गाना/बजाना, पहचानना। कोमल, तीव्र (विकृत) स्वरों को गाना/बजाना तथा राग के स्वरों की सहायता से उनको पहचानना। निम्नलिखित शुध्द स्वरों के पांच सरल अलंकार विलंबित तथा मध्य लय में गाना/बजाना तथा हर अलंकार का प्रयोग पाठ्यक्रम के किसी एक राग में करना।

१) सारे, रेग, गम, ... सांनी, नीध, धप
२) सारेसा, रेगरे, गमग,........सांनीसां, नीधनी, धपध (दादरा ताल में)

३) सारेगसारेगम, रेगमरेगमप ....सांनीधसांनीधप, नीधपनीधपम (रूपक ताल में)
४) सागरेसा, रेमगरे, गपमग .... सांधनीसां, नीपधनी, धमपध (तीन ताल में)
५) साम, रेप, गध, ... सांप, नीम, धग।

आ) रागज्ञान :

यमन, काफी, खमाज, भीमपलासी, बागेश्री, भूपाली, देस, दुर्गा

१) इन सभी रागों के आरोह – अवरोह, पकड़ तथा प्रारंभिक आलाप / स्वर विस्तार।
२) हर राग में मध्य लय का एक गीत अथवा गत।
३) इनमें से किन्हीं छह रागों में बंदिश / गत, आलाप / स्वरविस्तार, तान सहित अथवा गत तोड़ोंसहित पाँच मिनट तक गाने अथवा बजाने की तैयारी।
४) झपताल अथवा रूपक अथवा एकताल में एक गीत, दो सरगम गीत तथा दो लक्षण गीत, एक ध्रुपद (दुगुनसहित) एक भजन इस प्रकार सात अतिरिक्त गीत पाठ्यक्रम के रागों में किये जाएँ। वादन के विद्यार्थियों के लिए त्रिताल के अतिरिक्त अन्य तालों में दो रचनाएँ, तथा एक धुन वाद्यानुकूल अलंकार विशिष्ट बोलों सहित किये जाएँ।
५) मुख्य रागदर्शक स्वरों द्वारा राग पहचानना।
६) ''वंदे मातरम्'' और '' जनगणमन'' यह राष्ट्रगीत गाना–बजाना आवश्यक है।

इ) ताल – ज्ञान : एकताल, चारताल, झपताल की जानकारी तथा हाथ से ताल देकर बोलने का अभ्यास।

अंकपत्रिका :

सूचना : इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 15 मिनट का समय होगा। हर एक विद्यार्थी की परीक्षा अलग–अलग लेना आवश्यक है। हार्मोनियम का उपयोग केवल आधार स्वर (षड्ज–पंचम/मध्यम) के लिये होगा। संगत करने की अनुमति केवल प्रथम राग गाते समय होगी।

पूछे गए राग में आलाप तान के साथ बंदिश : 8 अंक तथा अन्य एक राग में तीन आलाप या 5 तान के साथ बंदिश : 7 अंक। कुल : 15 अंक।
एक अलंकार शुद्ध स्वरों में तथा एक किसी राग में : 6 अंक।
ध्रुपद या वाद्यानुकूल अलंकार ठाह तथा दुगुन में : 5 अंक।
तीन ताल को छोड़कर अन्य में बंदिश : 5 अंक।
लक्षण गीत, भजन, सरगम गीत, धुन, वन्दे मातरम् तथा जनगणमन इन में कोई तीन प्रकार : 12 अंक।
राग पहचानना (तीन राग) : 6 अंक।
स्वर पहचानना सारेग, पधनि, गमप, मपनि, इस प्रकार दो स्वर समूह : 6 अंक।
दो तालों की जानकारी तथा हाथ से ताल देकर ठेका बोलना : 5 अंक।

शास्त्र (मौखिक) :–

एक राग की जानकारी : 5 अंक।
किसी एक गीत/गत प्रकार या स्वर लिपि पद्धति की जानकारी : 4 अंक तथा अन्य तीन छोटी परिभाषाएँ : 6 अंक।
कुल : 15 अंक।
सर्व योग : 75 अंक।